

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२९५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५३ वे ❖ अंक ६ वा ❖ फेब्रुवारी २०२२ ❖ वीर संवत् २५४८ ❖ विक्रम संवत् २०७८

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● आदत में परिवर्तन हेतु करें		● इच्छाओं से मुक्त बनें ६२
नित्य आराधना	१५	● नात्याला गच्च मिट्टी मारलीच पाहिजे ६३
● अपने जीवन को संवारो	२०	● रंग बिरंगी - २ : रंग खुशी के ६५
● स्वदृष्टि है महत्त्वपूर्ण	२१	● जीवन दर्पण ६७
● कव्हर तपशील	२४	● हास्य जागृति ६८
● अंतिम महागाथा :		● आत्मशुद्धि स्वास्थ्य की
३४ - दिव्य वाणी जो स्थिर करें	२९	सर्वोच्च आवश्यकता ६९
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम	३७	● अनुबन्ध किससे है ७१
● २४ तीर्थंकर भगवान ची संक्षिप्त माहिती	४३	● नास्ति राग समं दुःखम् ७२
● कष्टकन्यांचे शिल्प, पुणे - उद्घाटन	४४	● पाऊलवाट ७३
● जैन शासन के चमकते हीरे	४५	● कुछ क्षणिकाएँ ७४
● जैन समाज में विवाह केवल गच्छ नहीं		● राहुलजी दर्डा, पुणे - पुरस्कार ७५
सम्पूर्ण जैन समाज की मजबूती महत्त्वपूर्ण	५७	● सुहाना कंपनी, अँवार्ड ७५
● संबंधों का जीवन - मधुर जीवन	५८	● सुर्यदत्ता ग्रुप - झी २४ तास, पुरस्कार ७९
● जीवन बोध : जहाँ पुण्य वहाँ लक्ष्मी	५९	● सुर्यदत्ता ग्रुप, सौ. सुषमा चोरडिया पुरस्कार ८०
● मौत का भय - असफलता	६०	● सौ. सीमा गांधी, पिंपरी - सन्मान ८०
● क्या हम सभ्य हो रहे है	६१	

● दी पूना मर्चन्ट चेंबर	८१	● महावीर की रोटी - हडपसर	८७
● मानव मिलन संस्था, पुणे	८१	● आहोर नगर के ३ परिवार संयम पथपर	८८
● स्वाध्याय भूषण पुरस्कार - मालेगांव	८२	● श्री. विजयजी नवलखा - अध्यक्षपदी	८९
● बाफना ट्रस्ट - रक्तदान शिबीर	८२	● श्री. अनिलजी गेलडा - उपाध्यक्षपदी	८९
● जैन ओसवाल बोर्डिंग, नाशिक	८३	● श्री. सुनीलजी बाफना - अध्यक्षपदी	९१
● नामको हॉस्पिटल, नाशिक	८३	● क्रोध के भयानक परिणाम	९३
● गणेश आनंद सौभाग्य गौशाला, नाशिक	८४	● धर्म के कॉलम में सिर्फ जैन लिखिए	९४
● तातेड परिवार, रक्तदान शिबीर	८७	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक रु. २२००

त्रिवार्षिक रु. १३५०

वार्षिक रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in

● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/
RTGS / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA

Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146

IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षित आहेत.

आदत में परिवर्तन हेतु करें नित्य आराधना

प्रवचनकार : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

अविचल -अविनाशी पद पर विराजमान सिद्ध भगवन्तों, अनन्तज्ञानी-अनन्तदर्शनी अरिहन्त भगवन्तों तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र में जीवन-पर्यन्त रमण करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि कोटि वन्दन ।

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनुपम वाणी संसार-चक्र में भटकने वाले प्राणियों को सन्मार्ग बताने वाली, भवसागर में डूबते हुए प्राणियों को तारने वाली, अनादि-अनादि के जन्म-मरण को मिटाने वाली है । आप आलोचना के पाठ में बोलते हैं - “सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय ।” तात्पर्य यह कि सांसारिक प्राणी की आत्मा और सिद्ध भगवन्तों की आत्मा के मूल गुणों में कोई अन्तर नहीं है। अन्तर है तो मात्र ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के आच्छादन का । सांसारिक जीवों की आत्मा कर्म-सहित है और सिद्ध बन गए जीवों की आत्मा कर्म-रहित । सांसारिक जीव अनादि काल से राग-द्वेष व कषायादि के वशीभूत होकर शुभाशुभ कर्मदल से आच्छादित इस लोक में चौरासी लाख जीवयोनियों में भटक रहा है । ये कर्मदल ही इस जीवात्मा को परमात्म तत्त्व से अलग किए हुए हैं । जीव जब सम्पूर्ण कर्म-दलिकों को नष्ट कर देता है तब वह परमात्मा, सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बन जाता है । सिद्ध बनने के लिए तत्पर बना हुआ जीव समता भाव से समस्त सुख-दुख सहन करता है । वह प्रत्येक परिस्थिति में भीतर के आत्मगुणों को प्रकट करने की साधना में लगा रहता है ।

आप और हम कर्मों को नष्ट करना चाहते हैं । जहाँ चाह, वहाँ राह विद्यमान है, पर राह पर चलेंगे तब लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे । पहली बात तो राह पर

चलते नहीं हैं और चलते भी हैं तो तन और कहीं रहता है, मन कहीं और जाता है । होता क्या है ? भीतर के आत्मगुण अधिकाधिक कर्म दलिकों से आच्छादित होते जाते हैं । धर्म-साधना और शुभ भावों के परिणामों से कुछ कर्म हटते हैं तो कुछ और नवीन कर्म चिपक जाते हैं । बुराई को बुराई के रूप में जान रहे हैं, समझ रहे हैं, पर उसे छोड़ नहीं पा रहे हैं । क्यों हो रहा है ऐसा ? कारण बता रहा हूँ । इस जीवात्मा का अनादि काल से जैसा स्वभाव बन गया है, वह छूट नहीं पा रहा है । छूटे भी कैसे ? मारवाड़ में तो कहावत भी है - “पड़्योड़ा स्वभाव जासी जीव सूँ ।”

आपने शराब पीने वाले व्यक्तियों को देखा होगा। शराबी शराब पीकर सारा भान भूल जाता है । वह नशे की हालत में नहीं समझ पाता कि वह क्या कर रहा है, क्या कह रहा है, उसके सामने कौन है ? उसे यह भी पता नहीं रहता कि वह किधर जा रहा है, कहाँ जा रहा है ? वह लड़खड़ाते हुए चलता है और कहीं भी गिर सकता है । वह कभी गंदगी भरी नालियों में गिर जाता है तो कभी सड़क के बीच फैले-पसरे कीचड़ में फिसल जाता है । आते-जाते लोग उसे नफरत की नजरों से देखते हैं और आगे निकल जाते हैं । कुछ लोग टीका-टिप्पणी भी करते हैं पर क्या नशे में चूर शराबी यह देख, पाता है या सुन पाता है । कुत्ते आ-आकर उसका मुँह सूँघते हैं । एकाध कुत्ता उसका मुँह भी चाट जाता है पर वह बेखबर है । कई बार तो कुत्ता उसके मुँह पर पेशाब भी कर देता है । कितनी घृणास्पद दशा है, पर शराबी को तो कुछ पता नहीं । नशा चीज़ ही ऐसी है ।

नशा भी एक निश्चित अवधी तक रहता है । अवधि बीतने पर नशा भी उतर जाता है । नशा उतर

जाने पर शराबी की आँखें कुछ-कुछ खुलती हैं और वह अपने आस-पास देखता है। मूँदी हुई आँखें जब पूरी खुलती है तब उसे अपना और जहाँ वह है उस स्थान का ध्यान आता है। लोग उसे देखते हैं, वह लोगों को देखता है। सोचता है - यह क्या हुआ ? कब से मैं यहाँ इस दशा में पड़ा हूँ। उठता है अपनी जगह से और चल पड़ता है अपने घर की ओर। मन में कुछ ग्लानि, कुछ पश्चात्ताप - “मैंने शराब पी और यह दशा हुई मेरी। मैंने अच्छा नहीं किया। शराब बुरी चीज है। मैं गलत रास्ते पर जा रहा हूँ। मुझे शराब नहीं पीनी चाहिए। आज तो पी पर अब नहीं पीऊँगा।”

दूसरे दिन शराबी व्यक्ति के मन में यही विचार कि मैं शराब नहीं पीऊँगा। पूरे दिन वह शराब नहीं पीने की ही सोचता रहा। दिन बीता और सांझ होने लगी। जैसे-जैसे सांझ होती गई, शराबी व्यक्ति अपने दिनभर के विचार से जूझने लगा। उसका शराब नहीं पीने का विचार धीरे-धीरे डगमगाने लगा। सांझ गहराई अंधेरा होने लगा। उस अंधेरे ने उसके शराब नहीं पीने के संकल्प को निगल लिया। संकल्प-विकल्पों के झूले में झूलता उसका मन शराब के ठेके की दुकान पर जाने को ललचाने लगा। आखिर वह पूर्णतः चलायमान हो गया। उसके कदम शराब के ठेके की ओर बढ़ गए। उसने वहाँ जाकर बोतल खरीदी और एक अंधेरे कोने में जाकर उस जहर को गले के नीचे घूँट-घूँट उतारने लगा।

पूछ रहा हूँ आपसे। यह क्यों हुआ ? दिनभर का संकल्प क्यों विकल्प बन झूला-झूलने लगा। अंधेरे के होते ही क्यों वह शराब के ठेके की ओर गया एवं वहाँ शराब खरीद कर क्यों पीना आरम्भ कर दिया उसने। बता रहा हूँ - उसे आदत पड़ गई पीने की। पड़ी हुई वह आदत उससे छूट नहीं रही। विचलित हो गया वह। यह एक दिन की नहीं, उसके लिए हमेशा की कहानी है। पीने के बाद हमेशा पश्चात्ताप, नहीं पीने का विचार, पर सांझ होते ही फिर वही ढर्रा, फिर वही बात, फिर वही

चलन। संकल्प सरल है, पर संकल्प में दृढ़ता बहुत कठिन है। आदमी आदतन इतना मजबूर है कि वह अपनी आदत को छोड़ नहीं पाता। आदत नहीं छोड़ता है तो परिवर्तन होता नहीं है।

परिवर्तन सर्वत्र, सदैव होता रहता है। आप जानते हैं कि प्रत्येक बारह कोस के बाद बोली-भाषा बदल जाती है। मारवाड़ के लोग मारवाड़ी बोलते हैं, मेवाड़ में मेवाड़ बोली जाती है, सिवाना पट्टी की सिवाची बोली कुछ भिन्न तरह की है, अजमेर-ब्यावर-जयपुर के लोग भी अलग तरह से बोलते हैं। यही बात राष्ट्र के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भी साफ दिखाई देती है। प्रकृति को देखें तो समय-समय पर मौसम बदलता है। कभी गर्मी, कभी सर्दी, कभी वर्षा। पेड़ों को देखिए तो पतझड़ आने पर पत्ते झड़ जाएंगे और वसंत आने पर फिर से नये पत्ते लग जायेंगे। प्राणी जगत में जानवरों और मानवों में देखिए - पहले बचपन, फिर यौवन और फिर बुढ़ापा। बचपन में होश नहीं, जवानी में जोश की कमी नहीं और वृद्धावस्था में न जोश, न होश। चेहरे पर झुर्रियाँ, माँसपेशियाँ सिकुड़ जाती हैं, बाल कालेसे सफेद हो जाते हैं, दाँत सब गिर जाते हैं और मुँह पिलपिला हो जाता है, कमर झुक कर टेढ़ी हो जाती है, कान ढीले पड़ कर लटक जाते हैं, पैर निःशक्त बन जाते हैं और दो-चार कदम भी लकड़ी के सहारे से ही चला जा सकता है। ये सब देखकर लगता है कि परिवर्तन संसार का अपरिवर्तनशील नियम है। जन्म के बाद मरण, सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख, धूप के बाद छाँव। सभी परिवर्तन को ही इंगित करते हैं, पर आदत!

आदत प्रकृति के इस नियम में शायद नहीं आती। तभी तो, एक बार तो आदत पड़ जाती है फिर जीवन भर वह छूट नहीं पाती और कभी-कभी तो जन्म-जन्म तक साथ चली चलती है। क्यों नहीं बदलती आदत? प्रश्न कर रहा हूँ। क्या कहेंगे आप ? यहीं कहेंगे कि -

“महाराज ! आदत है, ऐसी पीछे लगी है कि छूटती नहीं ।” शराब के लिए कहीं पढ़ा था कि पहले व्यक्ति शराब को पीता है, फिर शराब व्यक्ति को पीने लगती है। पर वह भी छूटती नहीं । शरीर का नाश, धन की बर्बादी, घर-परिवार का सर्वनाश । हो रहे है विनाश व्यसनों के कारण, पर व्यसन छूट नहीं पा रहा हैं । छूट जायें तो जीवन का सुधार हो जाये, विभाव में पड़ा जीव स्वभाव में आ जाये, लेकिन यह कहावत है कि आदत पड़ गई, जावे कोनी ।

किसी व्यक्ति को जब गुस्सा आता है, तब वह कुछ न कुछ कह जाता है और कई बार व्यक्ति कुछ गलत भी कर बैठता है । बाद में ख्याल आता है कि यह मैंने क्या किया ? मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था, ऐसा नहीं करना चाहिए था । मन में पश्चात्ताप होता है । कई बार व्यक्ति दुःखी भी बन जाता है । इतना होने पर भी क्या गुस्सा छोड़ देगा वह ? नहीं छोड़ा जाता गुस्सा । क्यों नहीं छोड़ा जाता ? आदत जो पड़ गई है । कभी ऐसा भी होता है कि सामने जो व्यक्ति है वह आयु में बड़ा है, रिश्ते-नाते से पद में बड़ा है या कोई सम्माननीय, प्रतिष्ठित व्यक्ति है । अब उस पर गुस्सा आता है, पर उसके समक्ष तो गुस्सा प्रकट नहीं किया जा सकता, उसे तो कुछ कहना मुमकिन नहीं हो पाता है । तब क्या होता है ? कैसे अंतर के गुस्से को प्रकट किया जाता है ? शायद उस समय व्यक्ति बड़बड़ाकर अपने स्वभाव का परिचय दे देता है ।

घर में छोटे-छोटे बालगोपाल हैं । व्यक्ति उन्हें खूब प्यार-दुलार करता है, गोदी में लेकर घुमाता है, खेलाता है । इतना स्नेह, इतना अपनत्व हो जाता है कि बालक उसके पास जब भी वह चाहे, हँसता-खिलखिलाता चला आता है । अब जो स्वभाव है वह भला कैसे छूटे ? व्यक्ति गुस्से वाला है, अतः कभी गुस्सा आया और सटाक्-सटाक् दो थप्पड़ बालक के गाल पर जड़ दिए । पूछ रहा हूँ आपसे कि फिर क्या

होगा ? अब वह व्यक्ति बालक को दुलारना चाहे, खिलाना चाहे तो क्या बालक पूर्व की भाँति उसके पास चला जायेगा ? नहीं । अब वह उस व्यक्ति के पास जाने में हिचकिचायेगा, शायद ही जायेगा ।

घर में जिसे पाला - पोसा, पढ़ाया-लिखाया, व्यापार करने या नौकरी पर जाने योग्य बनाया, कभी उसे गुस्से में कुछ कह दिया, भला-बुरा, कुछ का कुछ सुना दिया तो क्या होगा ? क्या उसे आपका गुस्सा अच्छा लगेगा ? वह क्या आपके कहे-सुने को सहन कर लेगा ? नहीं कर पायेगा सहन । अप्रिय लगेगी आपकी कही बात उसे । भले ही वह सामने कुछ नहीं बोले, आपको कुछ भी न कहे, पर उसके मन में नाराजगी का भाव उत्पन्न हो जायेगा । जो इज्जत, जो सम्मान उसकी नजरों में आपके लिए पहले था, वह अब नहीं रहेगा । जो कुछ आपने सुनाया है, वह उसके भीतर में कहीं चुभ रहा होगा । बता रहा हूँ, सुना होगा आपने भी । तीर और तलवार के घाव तो समय व्यतीत होने के साथ भर जाते हैं, पर वचनों के घाव, शब्द-बाण के घाव कभी नहीं भरते । वे इस जन्म में तो हरे रहते ही हैं, पर आने वाले जन्मों तक भी हरे रह सकते हैं । आपने गुस्से में कुछ कहा । परिणाम यह भी हो सकता है कि वह आपका लाल, बुढ़ापे का सहारा घर-बार छोड़कर कहीं अन्यत्र चला जाए । माता-पिता का घर छोड़कर एक नया घर, अपना स्वयं का घर बसाले । होता है ऐसा । कई बार ऐसा होते देखा और सुना गया है । पर क्यों होता है ? क्योंकि गुस्से की आदत जो है । आदत ऐसी जो छूटती नहीं, छोड़ी जाती नहीं । कभी आप छोड़ना चाहें पर वह आपको नहीं छोड़ती ।

नौकरी करने वाले के लिए यह कहा जाता है कि नौ काम किए, पर एक नहीं किया तो वह 'नहीं जीवित रहता है । जो पहले किया, उन पर पानी फिर जाता है । माता-पिता तो अपने बच्चों की नौ तरह से क्या, सौ तरह से बल्कि हजार-लाख, तरह से सेवा करते हैं, पर

फिर भी जब चूक होती है, उबाल आता है, गुस्सा प्रकट होता है तो पिछले सारे किए-कराए पर पानी फिर जाता है। सब व्यर्थ, सारा बेकार चला जाता है। जिसके लिए बहुत कष्ट उठाया। जिसके जीवन का निर्माण किया। जरा-से गुस्से ने उस अपने को पराया बना दिया। इस पर भी माता-पिता कुछ कर नहीं सकते। उन्हें तो जो कुछ हो गया और जो अब हो रहा है उसी में संतोष रखना पड़ता है। गुस्सा उनका स्वभाव है और सहन करना, संतुष्ट रहना उनकी मजबूरी है।

‘कोहो पिड़ पणासेइ’ क्रोध प्रीति का नाश करता है। लेकिन जहाँ प्रतिष्ठा का प्रश्न मन में आ जाता है वहाँ क्रोध का मान का उठाव हो ही जाता है। क्रोध-मान आदि में व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा देखता है। यह पुरातन परम्परा कहूँ या अनादि से जीव का स्वभाव, पर सत्य यही है। व्यक्ति को इसी तरह जीवन जीने की आदत-सी पड़ गई है। तीर्थकर भगवंतों की अनमोल अनुपम वाणी सत्य ही कह रही है कि व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर से, अनादिकाल से कषायों व राग-द्वेष में जन्म-मरण करते-करते अपने स्वभाव से विभाव में, ‘पर’ के प्रभाव में ऐसा रमण कर रहा है कि अब उसे वह ‘विभाव’ ही अपना स्वभाव लग रहा है। ऐसा कब तक चलेगा ? चाहिए कुछ परिवर्तन, कुछ बदलाव, जिससे जीव आत्मधर्म की ओर कदम बढ़ा सके ? इसमें अवरोधक बनी हुई है उसकी विभाव में उलझी हुई प्रकृति। जीव जिस दिन ‘पर’ को भूलेगा, ‘पर-पदार्थों’ में रमण का त्यागना प्रारंभ कर देगा, ‘स्व’ में रमण करने की ओर कदम बढ़ा देगा, वह दिन उसके अध्यात्म विकास का स्वर्णिम दिन बन जायेगा।

पर-पदार्थों के मोहाकर्षण में उलझे जीवात्मा को विभाव से स्वभाव में लाना है। कैसे हो सकेगा यह ? आप जिस क्रोधादि-चतुष्क के झूले में प्रतिपल ऊपर-नीचे हो रहे हैं, उसे स्थिर बनाकर कैसे उसे छोड़ना और अहिंसा, सत्य, विनय, सरलता आदि के झूले में सवार

होना ? जीवन में इस तरह के परिवर्तन हेतु ही ये नित्य प्रातः प्रार्थना, सामायिक-साधना, जप-तप की आराधना, प्रतिक्रमण से दैनिक कार्यालोचना करना आदि आचार्यों ने आपके लिए आवश्यक कर्म निर्धारित किए हैं। आज का युवावर्ग कई बार कहता है - ‘महाराज ! घर के बड़े-बूढ़े वर्षों से ये दैनिक-कर्म नित्य कर रहे हैं, पर हमारे देखने में तो उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। न क्रोध कम देखा उनका, न उनका मान घटा। सरलता भी उनमें प्रवेश नहीं कर पाई। लोभ का दामन तो उनका कभी छूटा ही नहीं, मैं उन्हें कहता हूँ - “भाई ! धैर्य रखो। ये जितने आध्यात्मिक नित्यकर्म हैं, इन्हें सदैव करते रहने के पीछे परिवर्तन की ही भावना है। परिवर्तन होगा, अवश्य होगा। अब तक हुआ नहीं तो अब हो जायेगा। घिसते-घिसते पत्थर भी गोल बन जाता है और महीन, बारीक धूल बनकर तल में बिछ जाता है। यह अध्यात्म-साधना, यह धर्माराधना एक सतत प्रक्रिया है। आज नहीं तो कल, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में यह जीवात्मा अपने निज स्वभाव में आने को तत्पर बनेगी। आवश्यकता इस बात की है कि हम इनमें लगे रहें, निरन्तर इन धर्म क्रियाओं को करते रहें। न जाने कब भावों में शुभता, शुभ्रता आ जाए, कब उत्कृष्ट रसायन बन जाए और यह आत्मा महात्मा बनकर परमात्मा बनने के लिए सन्नद्ध हो जाए।”

नियमित प्रार्थना, सामायिक, प्रतिक्रमण की बात रखी जा रही है। तन-मन को जोड़कर नित्य साधना करने के लिए ही वीतराग-वाणी से प्रेरणा की जा रही है। नित्य साधना-आराधना करें, नियमित करें जिससे टूटे हुए दिल मिलें और बुझे हुए दीपों में नई रोशनी जगमगाए। आपका मन समर्पणशील है, अतः कैसी भी विषम परिस्थितियाँ आएँ, कितनी ही उलझनें आएँ, आप टूटें नहीं। आपको कहीं भी पश्चात्ताप करने की या अन्तर में दुःख-दर्द अनुभव करने की आवश्यकता

नहीं है। आपका अधिकांश समय यदि साधना में लगा रहता है तो जीवन के अंतिम श्वास तक आपके भीतर शांति बनी रहेगी, अन्तरात्मा में अपूर्व संतुष्टि का अहसास होता रहेगा।

आप सभी को यही बात ध्यान रखनी है। अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए समता भाव से साधना-आराधना के साथ आगे बढ़ना है। यदि ऐसा करेंगे तो चाहे जैसी परिस्थिति हो, विषम से विषम समय उपस्थित हो जाए, पर आप हर स्थिति में, पल-प्रतिपल शांति व संतोष का अनुभव करेंगे।

स्वामी जी श्री चौथमल जी महाराज कहा करते थे

अपने जीवन को संवारो

प्रेषक : उमेश कोठारी, रिंगनोद (धार)

मानव जीवन मिला भाग्य से इसको तुम ना हारो।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप से, अपने जीवन को संवारो ॥

ज्ञान

ज्ञान रहित मानव होता है, निरा पशु समान है।
ज्ञान से ही मानव की, बनती सही पहचान है ॥
ज्ञान से अपना ज्ञान बढ़ाओ, अज्ञान तिमिर भगाओ।
स्वयं प्राप्त कर ज्ञान, और को सच्ची राह दिखाओ ॥
कभी करो न अहंकार तुम, ज्ञान रत्न को पाकर।
ज्ञान को सदा उपयोगी बनाओ, लोकहित में लगाकर ॥
परमेष्ठी का ध्यान लगाकर, निजात्मा को उबारो।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप से, अपने जीवन को संवारो ॥

दर्शन

नित्य प्रभु स्मरण की रखो, दिल में सच्ची भावना।
भवसागर से तिरने की, होती है इससे संभावना ॥
प्रभु स्मरण से हो जाते हैं, पल में सारे संकट दूर।
तन-मन की व्याधि हो जाती, पल में चकनाचूर ॥
अष्ट कर्म का प्रभु-स्मरण से, होता जाता नाश।
सच्चे मन से यदि स्मरण होगा तो होगी पूरी आस ॥

कि “व्यक्ति के पास धन नहीं होवे तो रोवे के म्हारै धन कोयनी। धन होवे तो यूँ रोवे कि रखूँ कठे, संभालूँ कीकर ? लड़को नहीं होवे तो रोवे के लड़को कोनी। लड़को होवे पण कह्या में कोनी रेवे तो यूँ रोवे के मारे कह्या में कोनी।” दोनों ही हालात में जब रोना ही है तो बजाय रोने के मन में शांति धारण करना सबसे बेहतर है। इसीलिए बता रहा हूँ कि स्वार्थ की वृत्ति को छोड़ें। परमार्थ को अपने अन्तर में स्थान दें। ऐसा करेंगे तो आत्म-प्रदेशों में समत्व का भाव जागृत होगा। भलाई और कर्त्तव्य-पालन के साथ सन्तोष की वृत्ति रखकर आगे बढ़ेंगे तो सभी का कल्याण संभव है। ●

शरणार्थी बनकर तुम नित्य, परमात्मा को पुकारो।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप से, अपने जीवन को संवारो ॥

चारित्र

जीवन का सच्चा सहयोगी व परम चारित्र।
उत्तम चारित्र की नींव पर, जीवन है आधारित ॥
चारित्र को तुम ग्रहण करो और कुकर्मों का दमन करो।
महापुरुषों के जीवन का तुम, स्वाध्याय व मनन करो ॥
चारित्र गुण है मूल्यवान, बढ़ता इससे मान है।
चारित्र से ही पाता मानव, जग में सदा सम्मान है ॥
कुव्यसनों को त्याज्य करो, और स्वयं को सदा सुधारो।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप से, अपने जीवन को संवारो ॥

तप

तप की तपन से आत्मा को मिलती है शीतलता।
तप बिन जीवन ऐसा दीपक जो कभी नहीं हैं जलता ॥
स्वस्थ बनाओ, सुखी बनाओ, तप से तन और मन।
तप से यह जीवन निर्मल होता, ज्यों निखरता कुन्दन ॥
जीवन का श्रृंगार है तप, तप से मिलते चमत्कार।
बनो तपस्वी, प्रभु नाम लो, कर लो प्रभु से साक्षात्कार ॥
बनके त्यागी और तपस्वी, पापों से स्वयं को तारो।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप से, अपने जीवन को संवारो ॥ ●

विस्तार पाता है तो अमृत हो जाता है ।

वस्तुतः सम्प्रदाय एक संघीय रूप है । क्योंकि मनुष्य अकेला रह नहीं सकता, इसलिए साधना के क्षेत्र भी सामूहिक होंगे और धर्म साधना भी तभी गतिशील होगी । एक दूसरे के सहयोगी बने रहे । जैसे परिवार में एक व्यक्ति बीमार पड़ जाय तो दूसरे सब सेवा में लग जाते हैं । धर्मसंघों का भी एक-दूसरे को एक-दूसरे से सहयोग मिल सके, प्रेरणा मिल सके । अतः महावीर ने संघ स्थापना की सम्प्रदाय नहीं बनाया । लेकिन कहा है-

“सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः।”

जैसे अग्नि से धूम निकलता है उसी प्रकार जितने भी क्रियाकलाप है दोष रूप धुएँ से घिरे रहते हैं ।

ये जितने भी अलग-अलग संघ बने हैं वे धर्म के शत्रु बन गये हैं । धर्म को तो समझा नहीं गया, केवल समूह बनाकर रहना ही धर्म हो गया । धर्म तो है आत्माभिमुखी और संघ-सम्प्रदाय है बहिर्मुखी । लेकिन भूल यह हुई कि हमने जो समूह बनाये उसे ही धर्म समझा तथा आगे जाकर यह भी किया कि अपने समूह को श्रेष्ठ समझा तथा दूसरे समूह की न केवल उपेक्षा की किन्तु उन्हें ठुकराया भी। अतः धर्म के नाम पर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और लड़ाईयों का अवांछित रूप हम देख रहे हैं ।

अपेक्षा है कि धर्म को समझने के लिए सम्प्रदाय के मूल्य की समीक्षा की जाये । यह जो संघीय परम्परा धर्म का रूप ले लेती है उसमें धर्म होता ही नहीं । ये परम्परारथे, ये पन्थ लबादे हैं एक तरह से । जरूरत पड़ी तो पहन लिये न जरूरत हो तो उतार दिये । जीर्ण-शीर्ण हो जाय तो फेंक दिए ।

वाद्यों की आवाज मुख्य हो जाती है और गायक का स्वर दब जाता है । इसी तरह अध्यात्म जगत में सम्प्रदायों का स्वर मुखर हो गया है और धर्म का स्वर गौण हो गया है । धर्म के स्वर की मुख्यता होगी प्रज्ञा से, चिन्तन से, अनुभूति से । अतः चिन्तन है मुख्य । प्रभु महावीर इसीलिए कह रहे हैं - “पण्णा समिक्खए धम्मं ।”

कच्छर तपशील - फेब्रुवारी २०२२

❖ सुहाना कंपनी - पुरस्कार

प्रवीण मसालेवाले, सुहाना कंपनी यांना ट्रेड प्रमोशन कॉन्सिल ऑफ इंडिया तर्फे नॅशनल एक्सपोर्ट अवॉर्ड २०२२ देण्यात आला. कंपनीचे डायरेक्टर श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया यांनी ८ जानेवारी २०२२ रोजी दिल्ली येथे पुरस्कार स्वीकारला. (बातमी पान नं. ७५)

❖ श्री. राहुलजी दर्डा, पुरस्कार

पुणे : ब्रिटन फार्मास्युटिकल्सचे अध्यक्ष आणि व्यवस्थापकीय संचालक श्री. राहुलजी दर्डा यांना राईज स्टार्टप टू यूनिकॉन कॉन्क्लेव्ह २०२१ दरम्यान अभिनव उपक्रमाद्वारे कंपनीला यशाच्या उंचीवर नेल्याबद्दल प्रतिष्ठित पायोनियरिंग एन स्मॉकट ऑन इंडियन इंडस्ट्री-हेल्टाकेअर यांच्या वतीने पुरस्कार मिळाला. केंद्रीय वाणिज्य आणि उद्योगमंत्री श्री. पीयूषजी गोयल यांच्या हस्ते २० नोव्हेंबर २०२१ रोजी नवी दिल्ली येथे श्री. राहुलजी कुंदनमलजी दर्डा यांनी पुरस्कार स्वीकारला. (बातमी पान नं. ७५)

❖ कष्टकऱ्यांचे शिल्प, पुणे

पुणे : प्रभाग क्र.२८ मध्ये मार्केट यार्ड येथील शिवनेरी पथावर नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले यांच्या संकल्पनेतून उभारण्यात आलेल्या अनेक शिल्पांचे उद्घाटन पर्वती मतदार संघाच्या आमदार माधुरीताई मिसाळ, कॅन्टोन्मेंटचे आमदार सुनीलजी कांबळे, महापौर मुरलीधरजी मोहोळ, दि पूना मर्चंट चेंबरचे अध्यक्ष राजेंद्रजी बाठिया व जितोचे अध्यक्ष ओमप्रकाशजी रांका या मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आले. (बातमी पान नं. ४४)

❖ सुर्यदत्ता ग्रुप - झी २४ तास, पुरस्कार

पुणे : झी २४ तास तर्फे मुंबई येथे आयोजित 'उडान-डेअर टू ड्रीम' पुरस्कार सोहळ्या दरम्यान

सूर्यदत्ता एज्युकेशन फाऊंडेशनचे संस्थापक अध्यक्ष आणि प्राध्यापक डॉ. संजयजी बी. चोरडिया यांचा सत्कार केंद्रीय अर्थ राज्यमंत्री डॉ. भागवती कराड, खासदार डॉ. श्रीकांतजी शिंदे, माजी मुख्यमंत्री तथा सार्वजनिक बांधकाम मंत्री अशोकजी चव्हाण, झी २४ तास मुख्य संपादक आणि व्यवसाय प्रमुख नीलेशजी खरे यांच्या हस्ते करण्यात आला.

(बातमी पान नं. ७९)

❖ **सूर्यदत्ता ग्रुप, सौ. सुषमा चोरडिया – पुरस्कार**

सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट्स, पुणेच्या उपाध्यक्षा सौ. सुषमाजी संजयजी चोरडिया यांना ज्ञानज्योति समाज सेवा संगठण सोलापूर तर्फे “आदर्श समाज भूषण प्रेरणा गौरव पुरस्कार” पणजी – गोवा येथे देण्यात आला. (बातमी पान नं. ८०)

❖ **दी पूना मर्चंट चेंबर, पुणे**

पुणे : पणन संचालक मा. श्री. सुनिलजी पवार व कृषी उत्पन्न बाजार समितीचे प्रशासक मा. श्री. मधुकांतजी गरड यांनी पूना मर्चंटस् चेंबरला सदरिच्छा भेट दिली. यावेळी चेंबरचे अध्यक्ष श्री. राजेंद्रजी बाठिया यांनी त्याचा सत्कार केला. (बातमी पान नं. ८१)

❖ **सौ. सीमा गांधी, पिंपरी – सन्मान**

पिंपरी पुणे येथील लेखिका व कवीयत्री सौ. सीमा शिरीष गांधी यांना टाटा मोटर्स कलासागर या दिवाळी अंकासाठी घेतल्या जाणाऱ्या विशेष लेख स्पर्धेत तीन पुरस्कार मिळाले. हे तीन पुरस्कार सौ. सीमाजी गांधी यांना अभिनेते आनंदजी इंगळे तसेच टाटा मोटर्सचे प्लॉट हेड अजयजी लॉल यांच्या हस्ते देण्यात आला. (बातमी पान नं. ८०)

❖ **ओस्तवाल स्वाध्याय भूषण, पुरस्कार**

सौ. शकुंतलादेवी विनोदजी ओस्तवाल परभणी स्मृती प्रीत्यर्थ देण्यात येणारा स्वाध्याय भूषण पुरस्कार मालेगांव येथे औरंगाबाद येथील स्वाध्यायी

श्री. चंपालालजी फुलफगर व त्यांच्या पत्नि ईचरजदेवी यांना संयुक्तपणे देण्यात आला.

(बातमी पान नं. ८२)

❖ **मानव मिलन संस्था, पुणे**

पुणे मानव मिलन संस्थेच्या अध्यक्षापदी सौ. मीना ओसवाल व उपाध्यक्षापदी सौ. अरुणा बोथरा यांची निवड करण्यात आली. पदग्रहण सोहाळा पुणे येथे मान्यवरांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.

(बातमी पान नं. ८१)

❖ **बाफना ट्रस्ट, वडगाव मावळ – रक्तदान शिबीर**

बाफना चॅरिटेबल ट्रस्ट, वडगाव जैन सकल संघ व लायन्स क्लब ऑफ वडगाव यांच्या संयुक्त विद्यमाने सौ. सुषमाजी सुनील बाफना यांच्या स्मृतिप्रीत्यर्थ रक्तदान शिबीर जैन स्थानक येथे दिनांक २ जानेवारी २०२२ रोजी संपन्न झाले.

(बातमी पान नं. ८२)

❖ **तातेड परिवार, निगडी – रक्तदान शिबीर**

निगडी, पुणे येथे स्व. पिताश्री नेमीचंदजी तातेड व मातोश्री पुंदाबाई तातेड यांच्या स्मृती प्रीत्यर्थ श्री. अशोकजी व सागरजी तातेड परिवारा तर्फे दि. ९ जानेवारी २०२२ रोजी भव्य रक्तदान शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. रक्तदान शिबिराचे उद्घाटन जैन कॉम्प्लेक्सच्या माजी राष्ट्रीय महीला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा यांच्या हस्ते अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत झाले. (बातमी पान नं. ८७)

❖ **नामको हॉस्पिटल, नाशिक – अॅम्ब्युलन्स भेट**

नाशिक, पवननगर संघाचे संघपती व मातोश्री ट्रॅव्हल्सचे संस्थापक स्व. श्री. राजमलजी मोतीलालजी चोरडिया यांच्या तृतीय स्मरण दिनानिमित्त निर्मलाबाई राजमलजी चोरडिया व आनंद मयूर चोरडिया कुटुंबीयांच्या वतीने नामको हॉस्पिटलला सुसज्ज अॅम्ब्युलन्सची भेट देण्यात आली. मान्यवरांच्या उपस्थितीत अॅम्ब्युलन्सचे लोकार्पण करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८३) ●